CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करलक्खण

[सामुद्रिक शास्त्र]

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनुष्यमें अपना अतीत और भविष्य जाननेकी इच्छा उतनी ही पुरातन है जितना कि स्वयं मनुष्य। ज्यों-ज्यों चारों ओरका वातावरण अनिश्चित-सा दिखता है, यह इच्छा और बलवती होती जाती है। हस्तरेखा विज्ञान इस अतीत और भविष्यको जाननेका एक प्राचीन विज्ञान है। हथेलीकी रेखाएँ और चिह्न हमारे मानसिक और नैतिक स्वभावसे ही सम्बन्धित नहीं हैं, बल्कि व्यक्तिकी भावी घटनाओंकी गतिविधियों-पर भी प्रकाश डालते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक हस्तरेखा विज्ञानकी एक ऐसी ही लघु किन्तु महत्त्वपूर्ण कृति है जो संक्षेपमें इस विज्ञानकी पर्याप्त जानकारी दे देती है। इसे पढ़ लेनेके बाद साधारण पाठक भी अनुभव करेगा कि सचमुच हस्तरेखाएँ बोलती हैं।

●

मूल्य पचहत्तर नये पैसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परलक्षण

[सामुद्रिक शास्त्र]

सम्पादक :

प्रो० प्रफुल्लकुमार मोदी एम० ए०

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला : प्राकृत ग्रन्थांक — २

सम्पादक :

डॉ० हीरालाल जैन

डॉ० आ० ने० उपाध्ये

KARLAKKHAN

{ Palmistory }

Prf. P. K. MODI

Bharatiya Jnanpith Publication

Third Edition 1964

Price Rs. -/75

o

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

प्रधान कार्यालय

९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७

प्रकाशन कार्यालय

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-५

विक्रय केन्द्र

३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

तृतीय संस्करण १९६४

मूल्य पचहत्तर नये पैसे

भारतीय ज्ञानपीठ
मूल्य संशोधित
१-५०

सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी-५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राक्कथन

मनुष्यकी हथेलियाँ [करतल] अपनी आकृति, बनावट, मृदुता, रंग, रूप और रेखाओंकी दृष्टिसे, एक-दूसरेसे अति भिन्न होती हैं। शरीर-शास्त्रियोंका कहना है कि, शरीरका यह ढाँचा जिस चमड़ेसे आवृत है वह कुछ तन्तुओंसे बँधा है। वे सब एक-दूसरेसे सम्बन्धित ही नहीं हैं बल्कि उनसे मोड़के स्थानोंसे कुछ चिह्न भी उठ आये हैं। इन हथेलियोंकी विषमताका कारण नाना आकृतिकी मांसपेशियाँ हैं। शरीरशास्त्री यह विश्वास नहीं करते कि यन्त्ररूपमें बने हुए घुमावदार मोड़ों और संकेतों-का आध्यात्मिक रहस्यमय या भविष्य बतानेवाला कोई अर्थ होता है।

मनुष्यमें अपने भविष्य जाननेकी इच्छा उतनी ही पुरातन है जितना कि स्वयं मनुष्य, और यह उतनी ही बलवती होती जाती है ज्यों-ज्यों मनुष्यका वातावरण हर तरफ़ अनिश्चित-सा दिखता है। प्रति मनुष्यमें आश्चर्यरूपसे अति भिन्न पायी जानेवाली हथेलियाँ ही भविष्य-ज्ञानपद्धति-का आधार हैं और इसे सामुद्रिक [हस्तरेखा] विद्या कहते हैं। हाथकी रेखाओं और चिह्नोंका, खासकर हथेलीका, लाक्षणिक अर्थ है। वे हमारे मानसिक और नैतिक स्वभावोंसे ही सम्बन्धित नहीं हैं बल्कि व्यक्ति की भावी घटनाओंकी गतिविधियोंपर भी प्रकाश डालते हैं। यदि कुछ चिह्न हमारे अतीतकी बातें बताते हैं तो कुछ भविष्यकी।

शरीरपर-के चिह्नोंसे मानवीय प्रवृत्तियोंका भविष्य कहना एक पुराना सिद्धान्त है तथा प्रायः इसका उल्लेख प्राचीन भारतीय साहित्य-में मिलता है और सामुद्रिक विद्या उससे एक-दम सम्बन्धित है। चूँकि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शारीरिक चिह्नोंकी व्याख्या सिर्फ़ लाक्षणिक है पर पूर्व और पश्चिम देशोंकी मौलिक मान्यताएँ एक-दूसरेसे नहीं मिलतीं।

भारतीय पद्धति रेखाओं, शङ्ख तथा चक्रोंपर ज्यादा जोर देती है जब कि पाश्चात्य पद्धतिमें नाना आकृतियों और रेखाओंको महत्त्व दिया गया है, तथा उसमें एक ही रेखाके अर्थोंमें बहुधा भेद पड़ जाता है। चाहे मौलिक मान्यताएँ प्रामाणिक न हों तथा बहुत-से अर्थ तर्कपूर्ण भले न हों पर एक तथ्य तो जरूर है कि अनेकोंके लिए यह सामुद्रिक विद्या आकर्षणकी वस्तु है। तथा गत कुछ वर्षोंमें प्रधान-प्रधान व्यक्तियोंके हस्तरेखा-चित्र लिये गये हैं तथा उनसे कुछ आनुमानिक निष्कर्ष निकाले गये हैं। सामुद्रिक विद्या बहुतोंके लिए संसारी जीविकाका धन्धा हो गया है परन्तु करलक्खण, जो कि यहाँसे प्रथम बार सम्पादित हो रहा है, के ग्रन्थकारका उद्देश्य धार्मिक ही है। इस ग्रन्थके लिखनेमें उनका उद्देश्य धार्मिक संस्थाओंको इस योग्य बनानेका है कि जिससे वे व्यक्तियों-की योग्यताको माप सकें और उनको [पुरुष या स्त्रीको] धार्मिक प्रति-ज्ञाएँ तथा नियम दे सकें।

इस सामुद्रिक शास्त्रका, भविष्य कहनेकी पद्धतिके रूपमें प्राचीन भारतीय विद्यामें स्थान है और उस विषयको प्रतिपादन करनेवाली यह छोटी पुस्तक करलक्खण भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित की जा रही है। प्राकृत पाठ, संस्कृत छाया तथा हिन्दी शब्दार्थके साथ है और सम्पादक प्रफुल्लकुमार मोदीने यह सब हमारे सामने स्पष्ट रूपसे रखा है। मोदीजी एक बुद्धिमान् नवयुवक विद्वान् हैं और यह संस्करण उनकी भावी योग्यताओंको बतलाता है। अपने पिता प्रो० डॉ० हीरालाल जैनकी मातहतीमें शिक्षित हुए, इस युवकसे सम्भावना है कि भविष्यमें संस्कृत और प्राकृत साहित्यके अनुसन्धानसे, हमें बहुत कुछ दे सकेगा।

श्री साहू शान्तिप्रसाद जैनने प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यताके बहुविध रूपोंको संसारके सामने रखनेके आदर्श उद्देश्योंसे प्रेरित हो भारतीय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञानपीठको स्थापित किया है। उनकी पत्नी श्रीमती रमारानी भी उनके उत्साह और उदारताके अनुरूप ही संस्थाके प्रकाशनोंमें तीव्र अभिरुचि रखती हैं। वे दोनों हमारे अति धन्यवादके पात्र हैं। हमें अनेक आशाएँ हैं कि यह संस्था न्यायाचार्य पं० महेन्द्रकुमारजी शास्त्रीके उत्साहपूर्ण प्रबन्धके नीचे अनेक विद्वानोंके सक्रिय सहयोगसे बहुत-से योग्य प्रकाशन सामने लायेगी और इस तरह हमारे देशकी सांस्कृतिक परम्पराको और समृद्ध करेगी।

कोल्हापुर
१५ अगस्त १९४७

— आ० ने० उपाध्ये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्तावना

हस्तरेखाज्ञानका प्रचार भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे रहा है। पुराणोंमें, बौद्धोंके पालि धर्मशास्त्रोंमें तथा जैनोंके प्राकृत आगमोंमें भी इसका उल्लेख पाया जाता है। संस्कृतमें उसे सामुद्रिक शास्त्र कहा गया है और अग्निपुराणके अनुसार प्राचीन कालमें समुद्र ऋषिने अपने शिष्य गर्गको इस विद्याका अध्ययन कराया था [लक्षणं यत्समुद्रेण गर्गायोक्तं यथा पुरा—अग्निपुराण]। वराहमिहिरने भी अपने सुप्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ बृहत्संहिताके महापुरुषलक्षण नामके सर्ग [६७-६९] में इसका उल्लेख किया है। यहाँतक कि बृहत्संहिताके टीकाकार उत्पलभट्टने 'यथाह समुद्रः' कहकर बहुत-से श्लोक समुद्र ऋषि प्रणीत उद्धृत किये हैं। हरिवंशपुराणके रचयिता जिनसेनाचार्यने भी 'नरलक्षण'के कर्ताका उल्लेख किया है और उन्हीं लक्षणोंका वर्णन हरिवंशपुराणके २३वें सर्गके ५५वें श्लोकसे १०७ श्लोक तक पाया जाता है। उनमें-से १३ [८५-९७] श्लोकोंका विषय हस्तलक्षण और उनकी सार्थकता है, अतः वे पूर्णतः हस्तरेखा-ज्ञानविषयक कहे जा सकते हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ हस्तरेखाज्ञानसम्बन्धी छोटी-सी पुस्तिका है। इस ग्रन्थकी जो प्राचीन हस्तलिखित प्रति मुझे उपलब्ध हुई थी उसपर ग्रन्थका नाम 'सामुद्रिक शास्त्र' दिया गया है। किन्तु ग्रन्थका असली नाम 'करलक्खणं' है जैसा कि उसकी आदि और अन्तकी गाथाओंसे सुस्पष्ट हो जाता है। यह ग्रन्थ ६१ प्राकृत गाथाओंमें पूर्ण हुआ है। ग्रन्थके विषयका सार निम्न प्रकार है :

प्रथम गाथामें रचयिताने जिन भगवान् महावीरको प्रणाम कर पुरुष और स्त्रियोंके करलक्षण कहनेकी प्रतिज्ञा की है। दूसरी गाथाके अनुसार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरुषको लाभ व हानि, जीवन व मरण तथा जय व पराजय रेखानुसार ही प्राप्त होते हैं। गाथा ३ के अनुसार पुरुषोंके लक्षण उनके दाहिने हाथमें और स्त्रियोंके उनके बायें हाथमें देखकर शोधना चाहिए। इसके आगे कर्तानि अंगुलियोंके बीच अन्तरका फल वर्णन किया है [गा० ४-५]; फिर उनके पर्वोंका वर्णन है [गा० ६]; तत्पश्चात् मणिबन्धकी रेखाओं-का उल्लेख कर [गा० ७–११] विद्या, कुल, धन, रूप और आयुसूचक पाँच रेखाओंका वर्णन किया है [गा० १२-२२]। आगेकी तीन गाथाओं-में [२३-२५] रेखाओंके आकार, रूप व रंगके अनुसार उनका फल बतलाया है। फिर अँगूठेके मूलमें यवोंका फल कहा गया है [गा० २६-२७] तथा उनके द्वारा भाई, बहन व पुत्र-पुत्रियोंकी सूचना दी गयी है [गा० २८-३०]। फिर लेखकने अँगूठेके नीचे यव, केदार, काकपद आदिके गुण-दोष बतलाये हैं [गा० ३१-३५]। फिर कनिष्ठिका अंगुलि-के नीचेकी रेखाओंसे पति-पत्नियोंकी सूचना दी गयी है [गा० ३६-३९]। तत्पश्चात् व्रत [गा० ४०], मार्गण, [खोज-बीन] [गा० ४१] व गुरुदेव-स्मरण [गा० ४२] सूचक रेखाओंका उल्लेख है। फिर लेखकने अंगुलियों आदिपर भँवरी [गा० ४३] व शंख [गा० ४४] रूप चिह्नोंका फल कहा है। फिर नखोंके आकार व रंग आदिका फल कहा गया है [गा० ४५] और उसके आगे मत्स्य, पद्म, शंख, शक्ति आदि चिह्नोंकी सूचना दी गयी है [गा० ४६-५३]। फिर हथेलीपर बहु रेखाओं व अल्प रेखाओंका फल कहा गया है [गा० ५४] और तत्पश्चात् परोपकारी हाथके लक्षण बतलाये गये हैं [गा० ५५]। कुछ चिह्न ऐसे हैं जो धन, वंश व आयु रेखाओंके फलोंको बढ़ा या घटा देते हैं [गा० ५६]। जीवरेखा व कुलरेखाके मिल जानेका फल गा० ५७ में तथा हाथके स्वरूपका फल गाथा ५८-५९ में कहा गया है। कैसे यव वाचना-चार्य व उपाध्याय व सूरि होनेवाले पुरुषकी सूचना देते हैं यह गा० ६० में बतलाया गया है। अन्तकी गाथामें लेखकने विनयके साथ बतलाया है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि यह ग्रन्थ उन्होंने संक्षेपतः यतिजनोंके हितार्थ इसलिए लिखा है कि वे इसके द्वारा प्रत्येक व्यक्तिकी योग्यता जानकर ही उसे व्रत दें।

दुर्भाग्यतः लेखकने अपना नाम व समय कहीं नहीं बतलाया और न हमारे पास कोई ऐसे साधन उपलब्ध हैं जिनसे इन बातोंका पता व अनुमान लगाया जा सके।

इस ग्रन्थकी भाषा प्रायः शुद्ध महाराष्ट्री है, क्योंकि इसमें 'त्' के लोप होनेपर केवल उसका संयोगी स्वर यश्रुति सहित या बिना उसके ही पाया जाता है; 'थ' के स्थानपर कहीं भी 'ध' न होकर सर्वत्र 'ह' ही हुआ है, और पूर्वकालिक कृदन्त अव्यय 'ऊण' प्रत्यय लगाकर बनाया गया है।

यद्यपि ग्रन्थ छोटा-सा है, तथापि वह इसलिए विशेष महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उसके द्वारा प्राकृतमें शास्त्रीय साहित्यके सम्बन्धमें हमारा ज्ञान विस्तृत होता है।

इस अवसरपर मैं भारतीय ज्ञानपीठके अधिकारी वर्गको धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने इस पुस्तकको अपनी ग्रन्थमालामें सम्मिलित कर प्रकाशित करनेकी कृपा की।

किंग एडवर्ड कॉलेज,
अमरावती
अप्रैल १९४७

— प्रफुल्लकुमार मोदी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

FOREWORD

The human palms considerably differ from each other in their shape, structure, softness, colour, figures and lines. The anatomist explains that the skin covering the skeleton is tied down by certain fibres which not only hold them together but at the same time give rise to certain marks along the folding points of the skin. The unevenness of the palm, however; is due to the muscles of various sizes. He refuses to believe that this mechanical arrangement of flexion-folds has any psychic, occult or predictive signification.

The desire to know future is as old an man, and it increases all the more when man's environments are uncertain in every respect. The human palm, as it varies in a wonderfully interesting manner from person to person, has come to be the basis of a predictive system known as palmistry. The lines and figures on the hand, especially the palm, are symbolically interpreted ; they are connected not only with mental and moral dispositions but are said to reflect also the current or future events

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

in the individual's life. If some marks record past events, others indicate the future ones.

The prediction of human tendencies from marks on the body is a very old idea, often referred to in early Indian literature ; and the system of palmistry is quite akin to it. As the interpretation of physical marks can be only symbolical, the basic presumptions in the East and West are not identical. The Indian system lays more stress on the lines, conchs and wheels while the western system takes into account the various mounts as well as lines : the meaning attached to the same line often varies.

The basic presumptions may not be verifiable, and some of the interpretations may not appeal to reason ; still it is a fact that many a mind has a strong fascination for palmistry ; and during later years palmprints of eminent personalities are taken and certain conclusions are inductively arrived at. Palmistry has become a profession with many for worldly ends ; but the author of the Kare-lakkhanam which is edited here for the first time, has a more pious aim : he tells us that his object in writing this book was only to enable religious missionaries to prejudge the potentialities of a person and then only administer religious oaths and vows to him or her.

Palmistry as a system of predicting future has found

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

place in ancient Indian wisdom as well, and a small text dealing with palmistry, the *Kara-lakkhanam*, is being published here by the Bhartiya Jnanpitha. The Prakrit text is accompanied by Sanskrit Chaya and Hindi paraphrase : and all this is presented to us in a neat manner by the editor, Shri Prafulla Kumar Modi. Mr. Modi is an intelligent young scholar ; and this edition augurs well of his potential abilities. Trained as he is under his father, Professor Dr. Hiralal Jain, it is expected that he would soon give us more and more of his researches in Prakrit and Sanskrit literature.

It is with the noble object of making known to the world the manifold aspects of ancient Indian culture and civilization that the Bharatiya Jnanpitha has been established by Shri Shanti Prasad Jain. His zeal and generosity are worthily matched by the keen interest which his wife Shrimati Rama Rani takes in the publications of the Institution. Both of them deserve our best thanks. We have every hope that this Institution will bring out many worthy publications with the active cooperation of various scholars and make thereby the cultural heritage of our nation all the more rich.

Kolhapur :
15 August, 1947.

A. N. Upadhye.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

INTRODUCTION

Palmistry has been practised in India from very ancient times. References to it are found in the Puranas, in the Pali books of the Buddhist Canon as well as in the Prakrit works of the Jaina Agama. The Sanskrit name for palmistry is "*Samudrika*" and according to the *Agni Purana, it is so called because a teacher by name Samudra had taught it to Garga in ancient times. Varaha Mihira also makes mention of it in his famous treatise on astrology *Brihat Samhita* in the chapters on Mahapurusha-lakshana [chapters 67-69]. Not only that, but the commentator Utpala Bhatta quotes many verses which he has ascribed to Samudra by saying "*Yathaha Samudrah*". Jinasena in his Harivamsa Purana mentions Sagara as the author of a book on the characteristics of man [Nara-lakhana] a description of which occupies verses 55 to 107 of chapter 23. Of these thirteen verses from 85 to 97 are devoted to the signs of the hand and their significance, and therefore treat of palmistry in the strict sense of the term.

---

*लक्षणं यत्समुद्रेण गर्गायोक्तं यथा पुरा । Agni Purana p. 242.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The work now under treatment is a small hand-book on palmistry. The only old manuscript that was available to me bears the title of "*Samudrika Sastra.*" But the real name of the work is "*Kara-lakkhanam*" as is clear from the opening and the closing verses of the book. The whole work is completed in 61 verses composed in Prakrit Gathas. Its contents may be summarised as follows :—

In the first verse the author pays homage to Jina Mahavira and proposes to deal with the signs of the hands of men and women. According to verse two, a man gets profit or loss, happiness or sorrow, life or death, victory or defeat, according to the lines [found on the palm of his hand]. The signs of men, according to verse 3, should be studied on the right hand, and those of women on the left. The author then deals with the significance of the interval between the fingers [verse 4–5] and of the nature of their joints [verse 6]. Then the lines of the wrist are dealt with [verses 7–11], and the five most significant lines denoting learning, family, wealth, beauty and longevity are named and described [verses 12–22]. The form, shape and colour of the lines are explained in the next three verses [verses 23–25]. Then the barley marks below the thumb are treated [verses 26–27], and they are said to indicate

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

the number of brothers, sisters and children which a person may have [verses 28–30]. The auther then goes on to deal with the section of the palm below the thumb [verses 31–35] and that below the smaller finger [verses 36–39]. Amongst the latter are included some lines which would point out how many wives or husbands the person would have. There are, then, the lines indicating the religious tendencies [Vrata Rekha V. 40], potentialities of research [Margana Rekha V. 41]. and pious tendencies [V. 41]. The author then goes on to describe the significance of the whirl marks [Bhramara V. 43] and conch marks [Samkha V. 44]. The form and colour of nails are then treated [verse 45], continued by a treatment of the marks of fish, lotus, cross. etc. [verses 46–53]. The significance of too many lines or too few lines on the palm is then shown [verse 54]. What sort of hand denotes possibilities of service to humanity is then explained [verse 55]. How certain specific marks aggravate or assuage, heighten or decrease the effect of other marks and signs is then shown [V. 56]. The effect of the life line and family line joining together is then stated [V. 57] and then the effect of the form and make up of the hand as a whole is given [V. 58–59]. What lines indicate a would be saint or teacher is then explained [V. 60]; and lastly, the author meekly tells us that his

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

object in writing the book was only to enable religious missionaries to prejudge the potentialities of a person and then only administer the religious oaths and vows to him or her.

Unfortunately, the author has not given us anywhere his name or date of the composition ; and there is no material at present available to me to determine these with any precision.

The language of the work is almost pure Maharashtri Prakrit, being there the vowels left with or without the Ya-sruti when *'ta'* is dropped ; *'tha'* never being changed to *'dha'* but always to *'ha'* and *'nna'* being the past participle absolute termination.

The work, small though it be, is valuable as it enriches our knowledge about the literature in Prakrit devoted to technical subjects.

I take this opportunity to thank the authorities of the Bharatiya JnanPitha, for undertaking to publish this work in their series.

King Edward College,
Amarawati.
April 1947

P. K. Modi

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय-सूची

		गाथा
१.	महावीर भगवान्‌को प्रणाम और विषय-प्रतिज्ञा	१
२.	रेखाओंका महत्त्व	२
३.	पुरुष और स्त्रीके लक्षण भिन्न हाथोंमें	३
४.	अंगुलियोंके बीचमें अन्तरका फल	४–५
५.	अंगुलियोंके पर्वोंका फल	६
६.	मणिबंध [कलाई] की रेखाओंका फल	७–११
७.	पंचरेखासे पूर्वकर्मका निर्देश	१२
८.	विद्या-रेखा	१३
९.	कुल-रेखा	१४–१५
१०.	धन-रेखा	१६
११.	ऊर्ध्व-रेखा	१७–१८
१२.	सन्मान-रेखा	१९
१३.	समृद्धि-रेखा	२०
१४.	आयु-रेखा	२१–२२
१५.	रेखाओंके स्वरूप और रंगका फल	२३–२५
१६.	अंगूठेके नीचे यवोंका फल	२६–२७
१७.	भाई-बहन बतानेवाली रेखाएँ	२८
१८.	सन्तान बतानेवाली रेखाएँ	२९–३०
१९.	अंगूठेके नीचे समफल यवोंका फल	३१
२०.	अंगूठेके बीच 'केदार'का फल	३२
२१.	अंगूठेके केदारको काटनेवाली रेखाओंका फल	३३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२. अंगूठेके मूलमें काकपदका फल ३४
२३. अंगूठेके बीचमें यवोंका फल ३५
२४. पुरुषकी स्त्रियाँ और स्त्रियोंके पति बतानेवाली रेखाएँ ३६–३७
२५. छोटी अंगुलीके मूलकी रेखाओंका फल ३८–३९
२६. धर्म-रेखा ४०
२७. मार्गण-रेखा ४१
२८. व्रत-रेखा ४२
२९. मौंरी-फल ४३
३०. शंख-फल ४४
३१. नखोंके स्वरूप और रंगका फल ४५
३२. मत्स्य, पद्म आदि चिह्नका फल ४६–५२
३३. हाथके बीचमें काकपदका फल ५३
३४. बहुरेखा व बिना रेखावाले हाथका फल ५४
३५. परोपकारी हाथके लक्षण ५५
३६. सूची व अग्निशिखा चिह्नका प्रभाव ५६
३७. जीवरेखाके कुलरेखासे मिल जानेका फल ५७
३८. हाथके स्वरूपका फल ५८–५९
३९. आचार्य, उपाध्याय व सूरि बतानेवाली रेखा ६०
४०. ग्रन्थ लिखनेका उद्देश ६१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करलक्खण

[सामुद्रिक शास्त्र]

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पणमिय जिणममिअगुणं गयरायसिरोमणिं महावीरं।
वुच्छं पुरिसत्थीणं करलक्खणमिह समासेणं ॥ १ ॥

प्रणम्य जिनममितगुणं गतरागशिरोमणिं महावीरम्।
वक्ष्ये पुरुषस्त्रियोः करलक्षणमिह समासेन ॥

अनन्त गुणोंके धारक तथा रागके जीतनेवालोंमें शिरोमणि, महावीर जिनेन्द्रको प्रणाम करके, मैं पुरुष और स्त्रियोंके हस्त-रेखाओंके लक्षण, संक्षेपमें, बतलाता हूँ।

पावइ लाहालाहं सुहदुक्खं जीविअं च मरणं च।
रेहाहिं जीवलोए पुरिसो विजयं जयं च तहा ॥ २ ॥

प्राप्नोति लाभालाभौ सुखदुःखे जीवितं च मरणं च।
रेखाभिः जीवलोके पुरुषः विजयं जयं च तथा ॥

इस जीवलोकमें मनुष्य लाभ और हानि, सुख और दुःख, जीवन और मरण, जय और पराजय रेखाओंके बलसे पाता है।

दाहिणहत्थे पुरिसाण लक्खणं वामयम्मि महिलाणं।
रेहाहिं सुद्ध णिज्झाइऊण[1] तो लक्खणं सुणहं ॥ ३ ॥

दक्षिणहस्ते पुरुषाणां लक्षणं वामके महिलानाम्।
रेखाभिः शुद्धं निर्ध्याय तल्लक्षणं शृणुत[2] ॥

---

३. १ प्रतौ 'णिज्झाकुणं' इति पाठः। २ प्रतौ 'जानीहि' इति पाठः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरुषोंके लक्षण दाहिने हाथ तथा स्त्रियोंके बायें हाथकी रेखाओं-को खूब ध्यानसे देखकर [जाने जाते हैं]। उन लक्षणोंको सुनो।

हाथोंके स्वरूपका फल वराहमिहिरने इस प्रकार बताया है–जिनके हाथ वानरसदृश हों वे धनी और जिनके व्याघ्रके समान हों वे पापी होते हैं। [बृहत्संहिता ६७, ३७]

अङ्गुल्यन्तरफलम्

बालत्तणम्मि सुलहं पएसिणी-मज्झमंतरघणम्मि।
मज्झिम-अणामियाणंतरम्मि[1] तरुणत्तणे सुक्खं ॥४॥

बालत्वे सुलभं प्रदेशिनीमध्यमान्तरघने।
मध्यमाऽनामिकयोः अन्तरे सघने तरुणत्वे सौख्यम् ॥

यदि प्रदेशिनी और मध्यकी अंगुलियोंका अंतर सघन हो [अर्थात् वे एक-दूसरेसे मिली हों और मिलनेसे उनके बीचमें कोई अन्तर न रहे] तो बालकपनमें सुख होवे। यदि मध्यमा और अनामिकाके बीच सघन अंतर हो तो जवानीमें सुख हो।

हाथकी अंगुलियोंका फल वराहमिहिरने इस प्रकार बताया है–लम्बी अंगुलियाँ दीर्घजीवियोंकी, अवलित [सीधी] सुभगोंकी, सूक्ष्म [पतली] बुद्धिमानोंकी और चपटी दूसरोंकी सेवा करनेवालोंकी होती हैं। मोटी अंगुलियोंवाले निर्धन और बाहरको झुकी अंगु-लियोंवाले शस्त्रसे मरनेवाले होते हैं। [बृहत्संहिता ६७, ३६-३७]

विरली अंगुलियोंसे मनुष्य निर्धन तथा सघनसे धनसंचय करनेवाले होते हैं। [बृहत्संहिता ६७, ४३]

---

४. १ प्रतौ '० तरणम्मि' इति पाठः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पावइ पच्छा सुक्खं कणिट्ठिआणामिअंतरघणम्मि ।
सव्वंगुलीघणम्मि अ होइ सुही धणसमिद्धो अ ॥ ५ ॥

प्राप्नोति पश्चात् सौख्यं [1]कनिष्ठिकाऽनामिकान्तरघने ।
सर्वाङ्गुलीघने च भवति सुखी धनसमृद्धश्च ॥

यदि कनिष्ठिका और अनामिकामें सघन अन्तर हो तो बुढ़ापेमें सुख होवे। यदि सभी अंगुलियाँ सघन हों तो मनुष्य सदा सुखी और धन-सम्पन्न होता है।

अङ्गुल्यन्तरफले पर्वाणां फलम्

सम्मंसंगुलिपव्वो पुरिसो धणवं सुही सया होइ ।
जइ सो अमंसपव्वो ता तस्स सिरी ण संभवइ ॥ ६ ॥

समांसाङ्गुलिपर्वा पुरुषः धनवान् सुखी सदा भवति ।
यदि स अमांसपर्वा तर्हि तस्य श्रीः न संभवति ॥

जिस पुरुषकी अंगुलियोंके पर्व मांसल हों वह धनवान् और सदा सुखी होता है। यदि उसके पर्व मांसल न हों तो उसके धन नहीं होता।

वराहमिहिरके अनुसार जिनकी अंगुलियोंके पर्व [पोर] लम्बे हों वे सौभाग्यवान् और दीर्घायु होते हैं। [बृहत्संहिता ६७, ४२]

मणिबन्धविषये गाथापञ्चकम्

धणकणगरयणजुत्तो मणिबंधे जस्स तिण्णि रेहाओ ।
आहरणविविहभागी पच्छा भद्दं च सो लहइ ॥ ७ ॥

---

५. १ प्रतौ 'कनिष्ठिकानामिकयोः अन्तरघने' इति पाठः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनकनकरत्नयुक्तः मणिवन्धे यस्य तिस्रः रेखाः ।
आभरणविविधभागी पश्चात् भद्रं च स लभते ॥

जिसके मणिवंध [कलाई] पर तीन रेखाएँ हों उसे धान्य, सुवर्ण और रत्नोंकी प्राप्ति होती है, उसे नाना प्रकारके आभूषणों-का उपभोग मिलता है तथा अन्तमें उसका कल्याण होता है ।

महुपिंगलाहिं सुहिआ अविणट्ठवया हवंति रत्ताहिं ।
सुहमाहिं मेहावी सुभगा य समत्तमूलाहिं ॥ ८ ॥

मधुपिङ्गलाभिः सुखिताः अविनष्टव्रताः भवन्ति रक्ताभिः ।
सूक्ष्माभिः मेधावी सुभगाश्च समत्वमूलाभिः ॥

यदि इन रेखाओंका रंग मधु [शहद] के समान पिंगल [लाल-कत्था रंगका] हो तो पुरुष सुखी होते हैं; यदि रक्तके समान लाल हो तो उनका कभी व्रत भंग नहीं होता; यदि सूक्ष्म हो तो वे बुद्धिमान् होते हैं; तथा यदि उनकी मूल सम हो तो वे सुभग अर्थात् स्वरूपवान् और भाग्यवान् होते हैं ।

मणिवंधके स्वरूपका फल वराहमिहिरने इस प्रकार बताया है—जिनका मणिवंध [कलाई] गठा हुआ और दृढ़ हो वे राजा होते हैं, ढीला होनेसे हाथ काटा जाता है तथा शब्द उत्पन्न करने-वाला हो तो पुरुष दरिद्री होता है । [बृहत्संहिता ६७, ३८]

तिप्परिखित्ता पयडा जवमाला होइ जस्स मणिवंधे ।
सो होइ धणाइण्णो खत्तिय पुण पत्थिवो होइ ॥ ९ ॥

त्रिपरिक्षिप्ता प्रकटा यवमाला भवति यस्य मणिवन्धे ।
स भवति धनाकीर्णः क्षत्रियः पुनः पार्थिवः भवति ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसके मणिवंधमें यवमालाकी तीन धाराएँ हों वह धनसे परिपूर्ण होता है और यदि वह क्षत्रिय हो तो राजा वनता है।

दुप्परिखित्ता रम्मा जवमाला होइ जस्स मणिवंधे।
सो हवइ रायमंती विउलमई ईसरो होइ ॥१०॥

द्विपरिक्षिप्ता रम्या यवमाला भवति यस्य मणिबन्धे।
स भवति राजमन्त्री विपुलमतिः ईश्वरः भवति॥

जिसके मणिवंधमें यवमालाकी दो धाराएँ हों वह राजमंत्री होता है, और उसमें यदि विशाल वुद्धि हुई तो वह राजा भी वनता है।

इक्कपरिक्खित्ता पुण जवमाला दीसए सुमणिवंधे।
सिट्ठी धणेसरो होइ तह य जणपुज्जियो पुरिसो ॥११॥

एकपरिक्षिता पुनः यवमाला दृश्यते स्वमणिबन्धे।
श्रेष्ठी धनेश्वरः भवति तथा च जनपूजितः पुरुषः॥

और जिसके मणिवंधमें यवमालाकी एक ही धारा दिखे वह पुरुष धनेश्वर सेठ वनता है और सव लोग उसकी पूजा करते हैं।

विज्जाकुलधणरूवं रेहतिअं आउ-उड्ढरेहाओ।
पंच वि रेहाओ करे जणस्स पयडंति[1] पुव्वकयं ॥१२॥

विद्याकुलधनरूपं रेखात्रितकं आयुः ऊर्ध्वरेखा।
पञ्चापि रेखा करे जनस्य प्रणयन्ति पूर्वकृतम्॥

पुरुषके हाथकी पंचरेखाएँ उसके पूर्वजन्मके कर्मोंको सूचित करती हैं। इनमें तीन विद्या, कुल और धनरूप हैं, एक आयुकी रेखा और एक ऊर्ध्व रेखा।

---

१२. १ प्रतौ 'पणयंति' इति पाठः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करतल अर्थात् हाथके तलुएके स्वरूपका फल वराहमिहिरने इस प्रकार बताया है—तलुआ गहराई लिये होनेसे मनुष्य पैत्रिक संपत्तिसे वञ्चित रहते हैं, गहराई गुलाई लिये होनेसे धनी होते हैं तथा तलुआ ऊपरको उठा हुआ होनेसे दातार होते हैं। जिनका तलुआ विषम अर्थात् ऊँचा नीचा हो वे निर्धन होते हैं। जिनका लाल हो वे ईश्वर [धनी], जिनका पोला हो वे व्यभिचारी तथा जिनका रूखा हो वे निर्धन होते हैं। [बृहत्संहिता ६७, ३९–४०]

जिनसेनाचार्यने भी इसी प्रकार लक्षण बतलाये हैं। इतना विशेष है कि वे गहराई लिये तलुएवालेको नपुंसक भी कहते हैं।

[हरिवंश-पुराण २३, ९१]

विद्यारेखा

तथाहि—मणिबंधाओ रेहा अंगुट्ठ पएसिणीण मज्झगया।
सा कुणइ सत्थजुत्तं विण्णाणविअक्खणं पुरिसं ॥१३॥

मणिबन्धात् रेखा अङ्गुष्ठप्रदेशिन्योः मध्यगताः।
स करोति शास्त्रयुक्तं विज्ञानविचक्षणं पुरुषम्।

मणिबंधसे प्रारम्भ होकर जो रेखा अंगूठा और प्रदेशिनीके बीच तक जाती है वह पुरुषको शास्त्रका ज्ञाता और विज्ञानमें कुशल बनाती है।

कुलरेखाविषये गाथायुग्मम्

मणिबंधाओ पयडा पएसिणी जाव जाइ जस रेहा।
बहुबंधुसमाइण्णं कुलवंसं णिद्दिसे तस्स ॥१४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मणिबन्धात् प्रकटा प्रदेशिनीं यावत्[1] याति यस्य रेखा ।
बहुबन्धुसमाकीर्णं कुलवंशं निर्दिशेत्[2] तस्य ॥

मणिबंधसे प्रकट होकर जिसकी रेखा प्रदेशिनी तक जाती है उसकी वह रेखा बहुत-से बंधुओं-से युक्त कुल और वंशकी द्योतक है।

दीहाइ जाण दीहं कुलवंस मडहिअं मडहिआए ।
वुच्छिण्णाए छिण्णं जाणसु भिण्णं च भिण्णाए ॥१५॥

दीर्घया जानीहि दीर्घं कुलवंशं लघुकं लघुकया ।
व्युच्छिन्नया छिन्नं जानीहि भिन्नं च भिन्नया ॥

यदि यह रेखा दीर्घ हो तो उसका कुल और वंश भी दीर्घ [अर्थात् पुरानी परम्परावाला] जानो। यदि रेखा छोटी हो तो कुल और वंश भी ओछा जानो। और यदि यह रेखा छिन्न हो तो कुलवंश भी व्युच्छिन्न [विनष्ट] और भिन्न हो तो भिन्न [विभाजित] जानो।

धनविषये

मणिबंधाओ पयडा संपत्ता मज्झिमंगुलिं रेहा ।
सा गुणइ धणसमिद्धं देसक्खायं तमायरियं ॥१६॥

मणिबन्धात् प्रकटा सम्प्राप्ता मध्याङ्गुलिं रेखा ।
सा करोति धनसमृद्धं देशख्यातं तमाचार्यम् ॥

मणिबंधसे प्रकट होकर जो रेखा मध्यम अंगुलि तक गयी हो वह पुरुषको धनसमृद्ध, देशप्रसिद्ध आचार्य [उपदेशक] बनाती है।

---

१४. १ प्रतौ 'प्रदेशिनी या च' इति पाठः ।
२ प्रतौ 'निर्देशयति' इति पाठः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अक्खंडा अप्फुडिया अपल्लवा आयया अछिण्णा य ।
इक्का वि उड्ढरेहा सहस्सजणपोसिणी[1] भणिया ॥१७॥

अखण्डा अस्फोटिता अपल्लवा आयता अच्छिन्ना च ।
एकापि ऊर्ध्वरेखा सहस्रजनपोषिणी[2] भणिता ॥

एक ही ऊर्ध्वरेखा यदि वह अखंड हो, फूटी न हो, उसमें शाखाएँ न हों, चौड़ी हो और छिन्न न हो तो हजार मनुष्योंके भरण-पोषणकी योग्यता रखती है ।

विप्पाणं वेदकरी रज्जकरी खत्तिआण सा भणिआ ।
वेसाणं अत्थकरी सुक्खकरी सुद्दलोआणं ॥१८॥

विप्राणां वेदकरी राज्यकरी क्षत्रियाणां सा भणिता ।
वैश्यानामर्थकरी सौख्यकरी शूद्रलोकानाम् ॥

यही रेखा विप्रोंको वेदज्ञाता बनानेवाली है, क्षत्रियोंको राज्य दिलानेवाली है, वैश्योंको लाभ करानेवाली है और शूद्रलोगोंको सुख उपजानेवाली कही गयी है ।

मणिबंधाओ पयडा संपत्तमणामिअंगुलिं रेहा ।
सा कुणइ सत्थवाहं नरवइसयपुज्जियं पुरिसं ॥१९॥

मणिबन्धात् प्रकटा सम्प्राप्ता अनामिकाङ्गुलिं रेखा ।
सा करोति सार्थवाहं नरपतिशतपूजितं पुरुषम् ॥

मणिबंधसे प्रकट होकर जो रेखा अनामिका तक जाती है वह पुरुषको सार्थवाह, अर्थात् किसी दलका नायक [अगुआ], बनाती है जिसकी सैकड़ों नरेश पूजा करते हैं ।

---

१७. १ प्रतौ 'पोसणी' इति पाठः । २ प्रतौ 'पोषणा' इति पाठः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊर्ध्वरेखाविषये गाथा

मणिबंधाओ पयडा पत्ता चरिमंगुलिं तु जा रेहा ।
सा कुणइ जससमिद्धिं सिट्ठिं वा विभवसंजुत्तं ॥२०॥

मणिबन्धात् प्रकटा प्राप्ता चरमाङ्गुलिं तु या रेखा ।
सा करोति यशःसमृद्धिं श्रेष्ठिनं वा विभवसंयुक्तम् ॥

मणिबंधसे प्रकट होकर जो रेखा अन्तिम अर्थात् छोटी अंगुलि तक जाती है वह खूब यश दिलाती है और यदि पुरुष सेठ हो तो उसका खूब विभव बढ़ाती है ।

आयुरेखाफलम्

वीसं तीसं चत्ता पण्णासं सट्ठि सत्तरिं असिअं ।
णउयं कणट्ठियाऊ पएसिणं जाव जाणिज्जा ॥२१॥

विंशतिः त्रिंशत् चत्वारिंशत् पंचाशत् षष्टिः सप्ततिः अशीतिः ।
नवतिः कनिष्ठिकायाः आयुः प्रदेशिनीं यावत् जानीयात् ॥

कनिष्ठिकासे लगाकर प्रदेशिनी तक रेखाके अनुसार वीस, तीस, चालीस, पचास, साठ, सत्तर, अस्सी और नव्वे वर्षकी आयु जानो। अर्थात् छोटी अँगुलीके प्रारम्भमें समाप्त हो जानेवाली रेखा वीस वर्षकी आयु सूचित करती है और उसके अंत तक जानेवाली तीस वर्षकी। इसी प्रकार अनामिकाके प्रारम्भ तक जानेवाली चालीस और अन्त तक जानेवाली पचास वर्षकी आयु बतलाती है। मध्यमाके प्रारम्भ तक जानेवाली रेखासे साठ और अन्त तक जानेवालीसे सत्तर वर्षकी आयुका बोध होता है, तथा प्रदेशिनीके प्रारम्भ तक अस्सी और अन्त तक नव्वे वर्षकी आयु मानी जाती है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काणंगुलीइ रेहा पएसिणं लंघिऊण जस्स गया।
अखंडिआ अप्फुडिया वरिसाण सयं च सो जियइ ॥२२॥

कनीनिकाङ्गुलिरेखा प्रदेशिनीं लंघयित्वा यस्य गता।
अखण्डिता अस्फुटिता वर्षाणां शतं च स जीवति ॥

कनीनिकासे चलनेवाली जिसकी रेखा प्रदेशिनीको पार कर जाती है और अखंडित हो, फूटी न हो, वह सौ वर्ष जीता है।

द्वारगाथा

पल्लविआ विच्छिण्णा विरला विसमा य णिद्दिसे[1] रेहा।
आ फुडिअ विवण्णा नीला रुक्खा तहा चेव ॥२३॥

पल्लविता विच्छिन्ना विरला विषमा च निर्दिशेत्[2] रेखा।
हरिता स्फुटिता विवर्णा नीला रूक्षा तथा चैव[3] ॥

रेखाके स्वरूप इस प्रकार बताये गये हैं—पल्लवित, विच्छिन्न, विरल, विषम, हरित, स्फुटित, विवर्ण, नील और रूक्ष।

आयुर्धनरेखा

पल्लविया सकिलेसा विछिण्णासु पावए महादुक्खं।
विरला धणव्वयकरी णीइधणं णत्थि विसमासु ॥२४॥

पल्लविता सक्लेशा विच्छिन्नासु प्राप्नोति महादुःखम्।
विरला धनव्ययकरी नीतिधनं नास्ति विषमासु ॥

पल्लवित रेखा क्लेशदायिनी होती है, विच्छिन्न रेखा महादुःख

---

२३. १ प्रतौ 'णिद्दसे' इति पाठः। २ प्रतौ 'निर्दिशति' इति पाठः। ३ प्रतौ 'एवम्' इति पाठः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहुँचाती है, विरल रेखा धनका व्यय कराती है और विषमसे नीतिपूर्वक अर्जित धन नहीं होता।

हरियासु चोरियधणं फुडिअविवण्णासु बंधणमुवेइ।
णीलासु णिव्वुइण्णो[1] रुक्खासु मिअभोगभागी अ ॥२५॥

हरितासु चौर्यधनं स्फुटितविवर्णासु बन्धनमुपैति।
नीलासु निर्विण्णः रूक्षासु मितभोगभागी च॥

हरितसे धन चोरी चला जाता है, [अथवा चोरीका धन मिलता है]; स्फुटित और विवर्णसे बन्धन अर्थात् गिरफ्तारी भोगना पड़ता है, नीलसे निर्विण्ण अर्थात् उदास रहता है और रूक्षसे परिमित भोग भोगनेको मिलते हैं।

वराहमिहिरके अनुसार चिकनी और गहरी रेखाएँ धनी पुरुषोंकी तथा इससे विपरीत निर्धनोंकी होती है। [बृहत्संहिता ६७, ४३]

अङ्गुष्ठफलसंबन्धिरेखाविषये गाथानवकम्

अङ्गुष्ठस्य मणिबन्धफलम्

अंगुट्ठयस्स मूले या तिपरिखित्ता समे जवे जस्स।
सो होइ धणाइण्णो खत्तिय पुण पत्थिओ होइ ॥२६॥

अङ्गुष्ठकस्य मूले या त्रिपरिक्षिप्ताः समा यवाः यस्य।
स भवति धनाकीर्णः क्षत्रियः पुनः पार्थिवः भवति॥

अँगूठेके मूलमें जिसके तीन समान यव हों वह धनवान् होता है, और यदि क्षत्रिय हो तो राजा बनता है।

दुप्परिक्खित्ताइ पुणो णरवइसमपुज्जिओ णरो होइ।
एगपरिक्खित्ताए जवमालाए धणेसरो होइ ॥२७॥

२५. १ प्रतौ 'णिव्वुईण्णो' इति पाठः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्विपरिक्षिप्तया पुनः नरपतिशतपूजितः नरः भवति ।
एकपरिक्षिप्ततया यवमालया धनेश्वरः भवति ॥

यदि दो यव हों तो पुरुष सैकड़ों नरेशोंसे पूजा जाता है, और यदि एक ही यवमालाकी धारा हो तो वह धनेश्वर होता है ।

वराहमिहिरने अँगूठेके यवोंका फल इस प्रकार बताया है— अँगूठेके बीचके यवोंसे मनुष्य धनी और अँगूठेके मूलके यवोंसे पुत्रवान् होता है । [बृहत्संहिता ६७, ४२]

अंगुट्ठयस्स मूले जत्तिअमित्ताउ थूलरेहाओ ।
ते हुंति भाविआ किर तणुआहिं होंति बहिणीओ ॥२८॥

अङ्गुष्ठकस्य मूले यावन्मात्राः स्थूलरेखाः ।
ते भवन्ति भ्रातरः किल तन्वीभिः भवन्ति भगिन्यः ॥

अँगूठेके मूलमें जितनी स्थूल रेखाएँ हों उतने भाई होते हैं और जितनी सूक्ष्म रेखाएँ हों उतनी बहन होती हैं ।

पुत्रपुत्रिकाविषये

अंगुट्ठयस्स हिट्ठे रेहाओ जस्स जत्तिआ हुंति ।
तत्तिअमित्ता पुत्ता तणुआहिं दारिया हुंति ॥२९॥

अङ्गुष्ठकस्य अधः रेखाः यस्य यावन्त्यः भवन्ति ।
तावन्मात्राः पुत्राः तन्वीभिः दारिकाः भवन्ति ॥

अँगूठेके अधोभागमें जिसके जितनी रेखाएँ हों उसके उतने ही पुत्र होते हैं । यदि रेखाएँ सूक्ष्म हों तो उतनी लड़कियाँ होती हैं ।

जत्तियमित्ता छिण्णा भिण्णा ते दारिआ मुआ जाण ।
अच्छिण्णा अब्भिण्णा जीवंति अ तत्तिआ तणुआ ॥३०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यावन्मात्राः भिन्नाः भिन्नाः ता दारिका मृताः जानीहि ।
अच्छिन्नाः अभिन्ना जीवन्ति च तावन्तः तनुजाः ॥

जितनी रेखाएँ छिन्न-भिन्न हों उतनी सन्तानें मृत जानो। जितनी रेखाएँ अच्छिन्न और अभिन्न हों उतने बालक जीते हैं।

अंगुट्ठयस्स हिट्ठे अखंडे समफले जवे जस्स ।
तस्स य खाणं पाणं मल्लं सव्वत्थ संपयडइ ॥३१॥

अङ्गुष्ठकस्य अधः अखण्डः समफलः यवो यस्य ।
तस्य च खानं पानं माल्यं सर्वत्र संप्राप्नोति[1] ॥

अंगूठेके अधोभागमें जिसके अखंड और समफल यव हों उसे खान-पान और माला [सन्मान] सर्वत्र मिलते हैं।

अंगुट्ठयस्स मज्झे केदारं जइ हविज्ज पुरिसस्स ।
सो होइ सुक्खभागी पावइ पुण खत्तिओ रज्जं ॥३२॥

अङ्गुष्ठकस्य मध्ये केदारं यदि भवेत् पुरुषस्य ।
स भवति सौख्यभागी प्राप्नोति पुनः क्षत्रियः राज्यम् ॥

अंगूठेके मध्यमें यदि केदार होवे तो वह पुरुष सुखभोग पाता है और यदि क्षत्रिय होय तो राज्य पावे।

केआरमइगयाओ रेहाओ जत्तिआउ दीसंति ।
तित्ताइं बंधणाइं पावइ अत्थक्खयं पुरिसो ॥३३॥

केदारमतिगताः रेखाः यावन्त्यः दृश्यन्ते ।
तावन्ति बन्धनानि प्राप्नोति अर्थक्षयं पुरुषः ॥

---

३१. १ प्रतौ 'सम्प्रजायते' इति पाठः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केदारको काटकर जाती हुई जितनी रेखाएँ दिखें, पुरुष उतने ही बार गिरफ्तारी [जेलखाना] भोगे और धनका क्षय हो।

अंगुट्ठयस्स मूले कागपयं होइ जस्स पुरिसस्स।
सो पच्छिमम्मि काले सूलेण विवज्जए पुरिसो ॥३४॥

अङ्गुष्ठकस्य मूले काकपदं भवति यस्य पुरुषस्य।
स पश्चिमे काले शूलेन विपद्यते पुरुषः॥

जिस पुरुषके अंगूठेके मूलमें काकपद हो वह बुढ़ापेमें शूली पाकर मरे।

दाहिणहत्थंगुट्ठयमज्झे अ जवेण जाण दिण जायं।
वामंगुट्ठजवेणं णूणं जाणिज्ज णिसि जायं ॥३५॥

दक्षिणहस्ताङ्गुष्ठकमध्ये च यवेन जानीहि दिने जातम्।
वामाङ्गुष्ठयवेन नूनं जानीयात् निशि जातम्॥

दाहिने अंगूठेके मध्यमें यव होय तो दिनमें उसका जन्म हुआ है ऐसा जानो, और बायें अंगूठेके यवसे रात्रिका जन्म समझो।

काणांगुलि-अधस्तनरेखाफलम्

काणंगुलीइ हिट्ठे रेहाओ जस्स जत्तिआ हुंति।
तत्तियमित्ता महिला महिलाण वि तत्तिआ पुरिसा ॥३६॥

कनिष्ठाङ्गुलेः अधः रेखा यस्य यावन्त्यः भवन्ति।
तावन्मात्राः वनिताः वनितानामपि तावन्तः पुरुषाः॥

कनिष्ठिका अंगुलीके नीचे जिसके जितनी रेखाएँ हों उसके उतनी ही स्त्रियाँ होती हैं और स्त्रियोंके उतने ही पुरुष होते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीहाहिं कोमारी धरिया फलिआहि तो विआणिज्जा ।
सुण्णाहि असोहग्गं फुडिआहिं विइ हवे जाण ॥३७॥

दीर्घाभिः कुमारिका धृता फलिताभिः विजानीयात् ।
शून्याभिः असौभाग्यं स्फुटिताभिः व्रती भवेत् जानीहि ॥

यदि ये रेखाएँ दीर्घ हों तो जानो कुमारी-पाणिग्रहण हो, यदि फलित हों तो भी यह फल जानो। यदि शून्य हों तो असौभाग्य जानो और फूटी हों तो व्रती होना जानो।

काण-अंगुलिमूलरेखाफलम्

काणंगुलिमूलोवरि रेहाओ जस्स तिण्णि चत्तारि ।
सो होइ पुण्णभागी रायाईणं पि णमणिज्जो ॥३८॥

कनिष्ठाङ्गुलिमूलोपरि रेखाः यस्य तिस्रः चतस्रः ।
स भवति पुण्यभागी राजादीनामपि नमनीयः ॥

कनिष्ठिका अंगुलीके मूलमें जिसके तीन या चार रेखाएँ हों वह बड़ा पुण्यभागी होता है, राजा आदिक भी उसे नमस्कार करते हैं।

जइ ताउ दाहिणकरे आमूलाओ वि होइ जणपुज्जो ।
अह वामे तो पच्छा सव्वेसिं सेवणिज्जइयो ॥३९॥

यदि ताः दक्षिणकरे आमूलतः अपि भवन्ति जनपूज्यः ।
अथ वामे तत्पश्चात्सर्वेषां सेवनीयः [सेवकः] ॥

यदि ये रेखाएँ दाहिने हाथमें हों तो प्रारम्भसे ही लोग उसकी पूजा करें और यदि बायें हाथमें हों तो पीछे अर्थात् बुढ़ापेमें सब लोग उसकी सेवा करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्रतरेखाफलविषये गाथा

जिट्ठाअणामिआणं मज्झाओ णिग्गयाउ वयरेहा।
तम्मूले जाओ पुण ताओ इह धम्मरेहाओ ॥४०॥

ज्येष्ठानामिकयोः मध्ये निर्गता व्रतरेखाः।
तन्मूले याः पुनः ताः इह धर्मरेखाः॥

ज्येष्ठा और अनामिकाके बीचसे निकलनेवाली 'व्रतरेखाएँ' कहलाती हैं, तथा जो उनके मूलमें प्रकट होती हैं वे 'धर्म-रेखाएँ' कहलाती हैं।

मार्गणरेखा

तासुवरि तिरित्था जा सा पुण मग्गत्तणे भवे रेहा।
अप्फुडिआपल्लवदीहराहिं सो चेव तत्थ थिरो ॥४१॥

तस्याः उपरि तिर्यक्स्था या सा पुनः मार्गत्वेन भवेत् रेखा।
अस्फुटितापल्लवितदीर्घाभिः स एव तत्र स्थिरः॥

धर्मरेखाके ऊपर जो तिरछी रेखा हो वह 'मार्गण' अर्थात् खोज करनेवालेकी सूचक रेखा है। जिसके अस्फुटित, अपल्लवित और दीर्घ हो वह उसी कार्यमें स्थिर रहे।

कुलरेहाए उवरिं मूलम्मि पएसिणीइ जा रेहा।
गुरुदेवसमरणं तस्स सा वि णिद्देसइ पुरिसस्स ॥४२॥

कुलरेखायाः उपरि मूले प्रदेशिन्याः[1] या रेखा।
गुरुदेवस्मरणं तस्य सापि निर्दिशति पुरुषस्य॥

---

४२. १ प्रतौ 'प्रवेशिनी' इति पाठः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुल-रेखाके ऊपर, प्रदेशिनीके मूलमें, जो रेखा हो वह उस पुरुषके गुरु और देवताका स्मरण रहेगा यह बतलाती है ।

अङ्गुलि-अङ्गुष्ठाग्रस्थभ्रमराणां फलम्

अंगुलिअंगुट्ठुवरिं हवंति भमराउ दाहिणावत्ता ।
धणभागी जणपुज्जो धम्ममई बुद्धिमंतो अ ॥४३॥

अङ्गुल्यङ्गुष्ठोपरि भवन्ति भ्रमराः दक्षिणावर्ताः ।
धनभागी जनपूज्यः धर्मरतिः बुद्धिमान् च ॥

अंगुलियों और अंगूठेके ऊपर जिसके दाहिनी ओर घूमनेवाली भौंरी हो वह धनका भोग करनेवाला, लोगोंमें पूज्य, धर्ममें मति रखनेवाला और बुद्धिमान् होवे ।

पावइ पच्छा सुक्खं पच्छिममुहसंठिए सुणह संखे ।
अब्भंतराणणे पुण होहीसि णिरंतरं सोक्खं ॥४४॥

प्राप्नोति पश्चात् सौख्यं पश्चिममुखसंस्थितः शृणु शङ्खः ।
अभ्यन्तराननने पुनः भविष्यति निरन्तरं सौख्यम् ॥

यदि अंगुलियों और अंगूठेपर पश्चिममुख स्थित शंख हो तो बुढ़ापेमें सुख मिले और यदि शंखका मुख भीतरको हो तो निरंतर सुख मिले ।

नखानां फलम्

मज्झुण्णया य सोणा अप्फुडिया जस्स हुंति करणहरा ।
सो राया धणवंतो विज्जाहिवई पसिद्धो अ ॥४५॥

मध्योन्नताः च श्रोणा अस्फुटिताः यस्य भवन्ति करनखाः ।
स राजा धनवान् विद्याधिपतिः प्रसिद्धश्च ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसके हाथके नख बीचमें उठे हुए, लाल और अस्फुटित हों वह राजा होय, धनवान् होय, विद्यावान् होय और प्रसिद्ध होय।

वराहमिहिरने नखोंके स्वरूपका फल इस प्रकार बताया है– जिनके नख तुषके समान [अर्थात् धानके वल्कलके समान बहु-रेखायुक्त और रूखे] हों वे नपुंसक होते हैं, जिनके चपटे और फटे हों वे धनहीन, जिनके बुरे विवर्ण [आभारहित] हों वे परमुखापेक्षी तथा जिनके ताम्रवर्ण हों वे सेनापति होते हैं।

[बृहत्संहिता ६७, ४१]

मत्स्यादिफलविषये गाथासप्तकम्

बाहिरमुहसंठाणे[1] मच्छपये मीनसे (?) फलं होइ।
अब्भंतराणणे पुण होहत्ति णिरंतरं सुक्खं ॥४६॥

बहिर्मुखसंस्थाने मत्स्यपदे मीनसे (?) फलं भवति।
अभ्यन्तरानने पुनः भविष्यति निरन्तरं सौख्यम् ॥

यदि बाहरको मुख किये हुए मछलीका चिह्न हो तो बुढ़ापे-में (?) फल दे और यदि भीतरको मुखवाली मछली हो तो निरन्तर सुख होवे।

वरपउमसंखसत्तियभद्दासणकुंकुमत्थिभयकुंभं।
वसहगयछत्तचामर दीसहइ वज्जं च मगरं च[2] ॥४७॥

वरपद्मशङ्खस्वस्तिकभद्रासनकुङ्कुमजलकुम्भाः।
वृषभगजछत्रचामराणि दृश्यते वज्रं च मकरश्च ॥

---

४६. १ प्रतौ '०संठाणयम्मि मच्छपय' इति पाठः।

४७. २ प्रतौ 'वज्जमगरं च' इति पाठः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तोरण-विमाण-केऊ जस्सेए होंति करयले पयडा ।
तस्स पुण रज्जलाहो होही अचिरेण कालेण ॥४८॥

तोरणविमानकेतवः यस्य एते भवन्ति करतले प्रकटाः ।
तस्य पुनः राज्यलाभः भवति अचिरेण कालेन ॥

श्रेष्ठ पद्म, शंख, स्वस्तिक, भद्रासन, कुंकुम, जलकुंभ, बैल, गज, छत्र, चामर, वज्र, मगर, तोरण, विमान और केतु ये जिसके करतलमें दिखाई पड़ें उसे बहुत शीघ्र राज्य मिले ।

मच्छेण अण्णपाणं कुंते सोभग्गभोयलाहं च ।
दामेण जुअबलद्दं सिंहे सेणावई होइ ॥४९॥

मत्स्येन अन्नपानं कुन्तेन सौभाग्यं भोगलाभं च ।
दाम्ना ऋजुबलित्वं सिंहे सेनापतिः भवति ॥

मछलीसे अन्नपान मिलता है, कुन्त अर्थात् भालेसे सौभाग्य और भोगोंका लाभ, मालासे खूब बल तथा सिंहसे सेनापति होता है ।

होइ धणं धण्णं व अ आणं वसहे वि सत्थए सुक्खं ।
चक्केण होइ वरसर सरवत्थे इच्छिया भोया ॥५०॥

भवति धनं धान्यमपि च आज्ञा वृषभेऽपि स्वस्तिकैः सौख्यम् ।
चक्रेण भवति वरश्रीः श्रीवत्से ईप्सिताः भोगाः ॥

बैलके चिह्नसे धन-धान्य और आज्ञा [हुकूमत] मिलते हैं । स्वस्तिकसे सुख, चक्रसे उत्तम लक्ष्मी और श्रीवत्ससे इच्छित भोग ।

वराहमिहिरके अनुसार वज्राकार रेखाओंसे मनुष्य धनी होता है; मीनपुच्छसे विद्यावान्; शंख, छत्र, शिविका, गज, अश्व और पद्माकार रेखाओंसे राजा; कलश, मृणाल, पताका,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंकुशाकार रेखाओंसे ऐश्वर्यवान्; चक्र, असि, परशु, तोमर, शक्ति, धनुष और कुन्तके आकारवाली रेखाओंसे सेनापति; ऊखलाकारसे यज्वान; मकर, ध्वजा, कोष्ठागारके आकारसे महाधनी; वेदीसदृशसे अग्निहोत्री और वापी, देवकुलादि त्रिकोणाकार रेखाओंसे धर्मवान् होता है।

[बृहत्संहिता ६७, ४४-४८]

रज्जाभिसेअपट्टं पावइ भद्दासणं भवे जस्स।
पावइ अणंतसोक्खं गयचामरवज्जछत्तेहिं ॥५१॥

राज्याभिषेकपट्टं प्राप्नोति भद्रासनं भवेद् यस्य।
प्राप्नोति अनन्तसौख्यं गजचामरवज्रछत्रैः ॥

जिसके भद्रासनका चिह्न हो वह राज्याभिषेकपट्ट पावे तथा गज, चामर, वज्र और छत्र चिह्नोंसे अनन्त सुख पावे।

मयरेण सहस्सधणं पउमे पुण लक्खधणवई होइ।
संखेण दहकोडिवई चक्केण णिहीसरो होइ ॥५२॥

मकरेण सहस्रधनं पद्मेन पुनः लक्षधनपतिः भवति।
शङ्खेन दशकोटिपतिः चक्रेण निधीश्वरः भवति ॥

मगरसे हजारोंका धन मिले; तथा पद्मसे लाखोंका धनपति होय। शंखसे दश करोड़का स्वामी होय और चक्रसे निधीश्वर हो जाय।

जघन्यफलविषये गाथाद्वयम्

कागपयं च सुलिहिअं करस्स मज्झम्मि दीसए जस्स।
खिप्पं सो धणमज्जइ पुणो वि णासइ खणे दव्वं ॥५३॥

काकपदं च सुलिखितं करस्य मध्ये दृश्यते यस्य।
क्षिप्रं स धनमर्जयति पुनरपि नाशयति क्षणे द्रव्यम् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसके हाथके बीच स्पष्ट 'काकपद' लिखा दिखता हो वह जल्दी धन कमायेगा और फिर जल्दी ही गमायेगा।

हुंति धणा वि हु अधणा बहुरेहारेहिएहिं हत्थेहिं।
आलिअकरा मणुस्सा परपीडपरायणा हुंति ॥५४॥

भवन्ति धनाः अपि खलु अधनाः बहुरेखारेखितैः हस्तैः।
अरेखाकरा मनुष्याः परपीडापरायणाः भवन्ति ॥

बहुरेखावाले हाथोंसे धनी निर्धन हो जाते हैं; तथा जिनके हाथमें रेखाएँ नहीं हैं वे मनुष्य दूसरोंको पीडा देनेमें तत्पर रहते हैं।

फुडिआ पगूढगुप्पा विरलंगुलिविसमपव्वसंपण्णा।
णिम्मंसा कठिणतला एए परकम्मकरा होंति ॥५५॥

स्फुटिताः प्रगूढगुल्माः विरलाङ्गुलिविषमपर्वसम्पन्नाः।
निर्मांसा कठिनतलाः एते परकर्मकराः भवन्ति ॥

जो हाथ फैले फूटे हों, जिनके गुल्म खूब गठे हुए हों, अंगुलियाँ विरली और विषमपर्व हों, जो बहुत मांसवाले न हों और जिनका तलुआ कड़ा हो वे हाथ दूसरोंके कार्य करनेवाले [अर्थात् परोपकारी या नौकरी करनेवाले] होते हैं।

धनादिरेखाविषये

सूई अग्गिसिहा वा सत्ति वा सिरी भज्जए जस्स।
धणवंसआउरेहं तारिसयं णिद्दिसे तस्स ॥५६॥

---

५४. १ प्रतौ 'स्फुटं' इति पाठः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूची अग्निशिखा वा शक्तिः वा श्रीः भज्यते यस्य ।
धनवंशआयुरेखाभिः तादृशं निर्दिशेत्[1] तस्य ॥

सूची या अग्निशिखा या शक्ति या श्री जिसके हाथमें विभाजित पड़ी हो उसकी धन, वंश और आयुकी रेखाएँ उसी अनुसार फल बताती हैं ।

धनविषये

जिअरेहाउ[2] कुलरेहमागया जस्स होइ अखंडा ।
रेहा अप्फुडिया से धणवुड्ढी होइ पुरिसस्स ॥५७॥

जीवरेखा कुलरेखामागता यस्य भवति अखण्डा ।
रेखा अस्फुटिता[3] तस्य धनवृद्धिः भवति पुरुषस्य ॥

जिसकी जीवरेखा कुलरेखासे आ मिली हो और अखंड हो, तथा रेखा फूटी न हो, उस पुरुषके धनवृद्धि होती है ।

सामान्यहस्तरेखाफलम्

वरपउमपत्तसरिसा अच्छिण्णा मंसला य संपुण्णा ।
ससणिद्धरत्तरेहा धणकणगपडिच्छिआ हत्था ॥५८॥

वरपद्मपत्रसदृशाः अच्छिन्नाः मांसलाः च सम्पूर्णाः ।
सस्निग्धरक्तरेखा धनकनकप्रतीप्सकाः हस्ताः ॥

जो हाथ उत्तम कमलपत्रके समान, अच्छिन्न, चिकने, संपूर्ण तथा चिकनी और लाल रेखाओंवाले हों वे धान्य और सुवर्णके ग्राहक होते हैं ।

---

५६. १ प्रतौ 'निर्दिशति' इति पाठः ।
५७. २ प्रतौ 'जिअलोहा' इति पाठः ।
३ प्रतौ 'अस्फुटिताः' इति पाठः ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूअंति पाणिरेहा णिद्धा जा होंति पउमसंकासा ।
अक्खंडांजलिणिद्धा अच्छिण्णा कोमला जस्स ॥५९॥

पूजयन्ति पाणिरेखाः स्निग्धाः याः भवन्ति पद्मसङ्काशाः ।
अखण्डाञ्जलिस्निग्धाः अच्छिन्नाः कोमलाः यस्य ॥

जिसकी हस्तरेखाएँ कमलके समान स्निग्ध, अखंड, अच्छिन्न और कोमल होती हैं, वे पूजी जाती हैं ।

वाचनाचार्यादिपदसूचिका गाथा

सो हवइ वायणारी कणिट्ठियाहिट्ठिमागया जवा जस्स ।
उज्झाउ अणमिआए जिट्ठाहिट्ठायतो सूरी ॥६०॥

स भवति वाचनाचार्यः कनिष्ठिकाधः आगताः यवाः यस्य ।
उपाध्यायः अनामिकया ज्येष्ठाधः आयतः सूरिः ॥

जिसकी कनिष्ठिकाके नीचे यव निकल आये हों वह वाचनाचार्य होता है, अनामिकाके नीचे यव निकलनेसे उपाध्याय और जेष्ठाके नीचे यव निकलनेसे सूरि होता है ।

इय करलक्खणमेयं समासओ दंसिअं जइजणस्स ।
पुव्वायरिएहिं णरं परिक्खिऊणं वयं दिज्जा ॥६१॥

इति करलक्षणमेतत् समासतः दर्शितं यतिजनस्य ।
पूर्वाचार्यैः नरं परीक्ष्य व्रतं दीयेत ॥

इस प्रकार पूर्वाचार्योंने यतियोंको करलक्षण, संक्षेपमें बताये हैं । इनके द्वारा मनुष्यकी परीक्षा करके व्रत देना चाहिए ।

इति करलक्षणम् ।

इति सामुद्रशास्त्रं समाप्तम्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पारिभाषिक-शब्दानुक्रमणिका

अ

अखंड १७, २२, ३१
अग्निशिखा ५६
अच्छिन्न १७, ५८, ५९
अनामिका ४, १९, ४०, ६०
अपल्लव १७, ४१
अभ्यन्तरानन ४४, ४६
अर्थकरी १८
अर्थक्षय ३३
अस्फुटित १७, २२, ४१, ४५, ५७
अंगुलि ५, २०, ४३
अंगुष्ठ १३, २६, २८, २९, ३१, ३२, ३४, ३५, ४३
अंतरघन ४, ५

आ

आचार्य १६
आयत १७
आयु १२, ५६

ई

ईश्वर १०

उ

उपाध्याय ६०

ऊ

ऊर्ध्वरेखा १२, १७

क

कनिष्ठिका ५, २१, ६०
करलक्षण १, ६१
काकपद ३४, ५३
काणंगुलि २२, ३६, ३८
कुल १२, १४, ५७
कुलरेखा ४२
कुंकुम ४७
कुन्त ४९
कुम्भ ४७
केदार ३२, ३३
कोमल ५९
क्रोडपति ५२

ग

गज ४७, ५१
गुरुदेवस्मरण ४२
गुल्म ५५

च

चक्र ५०, ५२
चामर ४७, ५१
चोरित धन २५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छ

छत्र ४७, ५१
छिन्न १५

ज

जीव रेखा ५७
ज्येष्ठा ४०, ६०

त

तनुरेखा २८
तिर्यक्स्था ४१
तोरण ४८

द

दक्षिणावर्त ४३
दाम ४९
दारिका २९, ३०
दीर्घ ४१

ध

धन १२, २४, २५, २६
धन-व्यय २४
धनेश्वर ११, २७, ५२
धर्मरेखा ४०

न

नख ४५
निर्मांस ५५
निर्विण्ण २५
नीति २४
नील २३, २५

प

पद्म ४७, ५२, ५७, ५८, ५९
परिक्षिप्त ९, १०, ११, २६, २७
पर्व ६, ५५
पल्लवित २३, २४
पश्चात् ३९, ४४
पश्चिम काल ३४
पश्चिम मुख ४४
प्रदेशिनी ४,१३,१४,२१,२२,४२
पार्थिव ९, २६
प्राणरेखा ५९
पुत्र २९
पूर्वकर्म १२
पूर्वाचार्य ६१

ब

बहिर्मुख ४६
बंधन २५, २३
बंधु १४

भ

भगिनी २८
भद्रासन ४७, ५१
भ्रमर ४३
भ्राता २८
भिन्न १५

म

मकर ४७, ५२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मणिबंध ७, ९, १०, ११, १३, १४, १६, १९
मत्स्य ४९
मधुपिंगल ८
मध्यमा ४, १६
महादुःख २४
मार्गस्व ४१
मांसल ५८
मीन ४६
मूल ४०

य

यति ६१
यव २६, ३१, ३५, ६०
यवमाला ९, १०, ११, २७

र

रक्त ८, ५८
राजमंत्री १०
राज्य २२
राज्यकरी १८
रूक्ष २३, २५
रेखात्रिक १२

ल

लक्षण ३
लक्षपति ५२

व

वज्र ४७, ५१
वंश १५, ५६
व्रत ६१
व्रतरेखा ४०
वृषभ ४७, ५०
वाचनाचार्य ६०
विच्छिन्ना २३, २४
विद्या १२
विप्र १८
विभव २०
विमान ४८
विरला २३, २४
विरलांगुलि ५५
विवर्ण २३, २५
विषमा २३, २४, ५५
विज्ञान १३
वेदकरी १८
वैश्य १८

श

शक्ति ५६
शंख ४७, ५२
शास्त्र १३
शूद्र १८
शून्य ३७
शूल ३४
श्री ५६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीवत्स ५०
श्रेष्ठी ११, २०

स

समत्वमूल ८
समांस ६
संपूर्ण ५८
सिंह ४९
सुखकरी १८
सूची ५६
सूरि ६०
सूक्ष्म ८
सोण ४५
स्वस्तिक ४७, ५०
स्फाटित ३७
स्निग्ध ५८, ५९
स्फुटित २३, २५, ३७, ५५
स्थूल रेखा २८

ह

हरित २३, २५

क्ष

क्षत्रिय ९, १८, २६, ३२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

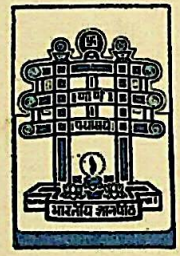

भारतीय ज्ञानपीठ
प्रकाशन

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त अनुपलब्ध
और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन
तथा लोक-हितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

●

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन
अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन.

●

मुद्रक : सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी ५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh